21. किन्हीं दो का परिचय दीजिए। (2 × 5 = 10)

(a) चंदबरदाई

(b) जायसी

(c) तुलसीदास

(d) भूषण

II year Hindi

NOVEMBER 2022

**70207/CLE3H/
CL53H**

Time : Three hours Maximum : 75 marks

PART A — (5 × 3 = 15 marks)

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक उत्तर 50 शब्दों में हों।

1. कबीर प्रेम रहित मनुष्य शरीर को शमशान क्यों कहते हैं?

2. तुलसीदास अपने आपको भिखारी कहते हुए कैसी विनती करते हैं?

3. राणा के मीरा को मारने के प्रयत्न क्यों विफल रहें?

4. बिहारीलाल धतूरे से भी सोना अधिक मादक क्यों कहते हैं?

5. जैन साहित्य का परिचय दीजिए।

6. भक्ति आंदोलन से तात्पर्य क्या है?

7. सूरदास की वात्सल्य भावना का परिचय दीजिए।

8. रीतिबद्ध काव्य से तात्पर्य क्या है?

PART B — (4 × 5 = 20 marks)

किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

9. जब मैं था तो गुरू नाहिं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी ता में दो न समाहिं।।

10. साई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू भूखा न जाय।।

11. सुन्दर स्याम सलोनो गिरिधर नंदनंदन आराधै।
जा तन रचि रचि भूषन पहरे भाँति भाँति के साज।
ता तन कहै भस्म चढ़ावत नाहिं न लाज।
छट भीतर नित बसत साँवरो, मोर मुकुट सिर धारे।।

12. तू दयालू दीन हौं, तू दानी, हों भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज-हारी।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो-सौ?
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तो-सो।।

13. जोगी मत जा मत जा मत जा, पाइँ परूँ तेरी चेरी हौं।
प्रेम भगति को पैडो ही न्यारो हमकूँ गलै बल जा।
अगर चँदण की चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा।।

14. मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाई परे स्यामु हरित दुति होइ।।

15. बाह्य शुद्धता देह को देता ही है तोय।
अंतः करण विशुद्धता प्रकट रूप सत्य से जों।

PART C — (4 × 10 = 40 marks)

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक उत्तर 500 शब्दों में लिखिए। (2 × 10 = 20)

16. सूरदास के पठित पदों का मूल्यांकन कीजिए।

17. बिहारी के पठित दोहों की समीक्षा कीजिए।

18. तिरुवल्लुवर के पठित दोहों का सारांश लिखिए।

किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए। (1 × 10 = 10)

19. वीरगाथा काल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

20. प्रेममार्गी शाखा की विशेषताओं पर विचार कीजिए।